22

पवित्र भूमि पर खड़े होना

2 शमूएल 6; 7; 1 इतिहास 13:15-17; 22; 28

जब मूसा जलती हुई झाड़ी के पास गया, तो परमेश्वर ने उसे कहा, ''अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, ज़्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है'' (निर्गमन 3:5)। जब हम आराधना के लिए इकट्ठा होते हैं, तो उस की पवित्र उपस्थिति में हम पवित्र भूमि पर ज़ड़े होते हैं। ज़्या हमें यह अहसास होता है, या आराधना हमारे लिए ऐसी चीज़ बन गई है कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति का कोई भय ही नहीं होता?

आराधना, सब से पहले तो इसी बात को मान कर झुकना है कि परमेश्वर ज़्या है। आराधना का अर्थ ठहराए हुए कार्य को करना ही नहीं है बल्कि उस सर्वशज़्तिमान की उपस्थिति तथा सामर्थ को मानना है। आज आराधना में परिवर्तन की बातें आम सुनने को मिलती हैं, परिवर्तन होना भी चाहिए, पर यह परिवर्तन आराधना के ढंग में नहीं, बल्कि हमारे व्यवहार में अर्थात *हमारे मनों में होना* चाहिए! हम दिखावटी लोग बन गए हैं, जिन्हें प्रभु के प्रति थोड़ा सा भी समर्पण दिखाने केलिए हम में उत्साह पैदा करने के लिए आत्मिक जोश दिलाने वालों की आवश्यकता है। एक बार फिर हमें याद दिलाने की आवश्यकता है कि जिस भूमि पर हम ज़ड़े हैं, वह पवित्र है।

2 शमूएल 6; 7 (और 1 इतिहास में इससे सज़्बन्धित पद) परमेश्वर की उपस्थिति में आने का महत्व याद दिलाने वाले हैं। जैसे यहोवा के मन के अनुसार एक पुरुष, दाऊद को याद करवाना आवश्यक था, वैसे ही हमें भी याद दिलाना पड़ता है।

राजा के रूप में अपने आरज़्भिक दिनों में उसने अधिकतर लोगों को जीवन ज़र के लिए संतुष्ट करने के लिए काम किया था। तीस वर्ष का हो जाने के बाद भी उसने, देश को एक रखा था, यरूशलम को अपनी राजधानी बनाया था, और दिखा दिया था कि वह एक न्याय करने वाला निष्पक्ष राजा है। यह तो दाऊद के लिए केवल प्रस्तावना ही थी। उसने उज़र और दक्षिण को मिलाया था; अब वह परमेश्वर और लोगों को मिलाना चाहता था। परन्तु राजा दाऊद का इरादा नेक होने के बावजूद उसे भी हमारी तरह ही आराधना के बारे में बहुत कुछ सीखना आवश्यक था।

यह देखने के लिए कि ''पवित्र भूमि पर खड़ा होने'' का ज़्या अर्थ है। आइए 2 शमूएल 6; 7 और 1 इतिहास 13-17 को अपना रास्ता बनाते हैं।

आराधना एक गंभीर कार्य है
(2 शमू. 6:1-11; 1 इति. 13:1-14)

1 इतिहास का लेखक हमें बताता है कि यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लेने के बाद दाऊद ने सब से पहले वाचा का सन्दूक यरूशलेम में लाने का निश्चय किया। उसकी सब से बड़ी प्राथमिकता यरूशलेम को ''दाऊद का नगर'' नहीं बल्कि *परमेश्वर का नगर* बनाना अर्थात देश में परमेश्वर को प्रमुज़ स्थान दिलाना था।

''तब दाऊद ने इस्राएल की सारी मण्डली से कहा, यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो, तो ... हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहां ले आएं; ज़्योंकि शाऊल के दिनों में हम उसके समीप नहीं जाते थे'' (1 इतिहास 13:2, 3)। ज़्योंकि इसमें हमने ''अपने परमेश्वर के सन्दूक'' की बात पहली बार पढ़ी है, इसलिए कुछ पृष्ठभूमि का ज्ञान होना ठीक रहेगा।

मूसा जब दस आज्ञाएं लेने के लिए सीनै पर्वत पर गया था तो उसे आराधना का स्थान, जिसे निवास या निवास स्थान कहा जाता था, बनाने का निर्देश दिया गया था। तज़्बू के सामान में वाचा का सन्दूक भी शामिल था। वाचा का सन्दूक एक छोटा, सोने से ढका हुआ सन्दूक था। सन्दूक केअंदर दस आज्ञाओं वाली पत्थर की दो पट्टियां, मन्ना वाला सोने का बर्तन, तथा उस हारून की छड़ी को मिलाकर जो अंकुरित हो गई तीन वस्तुएं थीं। सन्दूक का ढज़्कन भी सोने का था और उसे ''प्रायश्चित का ढकना'' कहा जाता था (नोट निर्गमन 25:22)। ढकने के ऊपर अपने पंख फैलाए और प्रायश्चित के ढकने की ओर मुंह किए हुए, हर सिरे पर सोने केबने[1] करूब थे। सन्दूक का एक और वर्णन आवश्यक है: उसके चारों पायों पर सोने के कड़े लगे हुए थे। सन्दूक को उठा कर ले जाने के लिए उन कड़ों में दो सोने के अलंग या डंडे लगे हुए थे (निर्गमन 25:12-15)।

तज़्बू बन जाने के बाद वाचा का सन्दूक परम पवित्र स्थान में रखा गया था। परम पवित्र स्थान में केवल महायाजक ही जा सकता था, और वह ज़ी प्रायश्चित के दिन, वर्ष में केवल एक बार।[2] कोई दूसरा व्यज़्ति उस सन्दूक को फिर नहीं देख सकता था। कोई भी, महायाजक भी उसे छू नहीं सकता था। जब तज़्बू ले जाना होता था तो कहात का पुत्र (लेवी के गोत्र में से) सन्दूक को डंडों को कड़ों में डाल कर कंधों से उठा कर ले जा सकते थे।[3] गिनती 4:15 पर ध्यान दें:

> और जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्र स्थान और उसके सारे सामान को ढांप चुके, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिए आएं, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएं, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं। ...

आयत 20 पर भी ध्यान दें: ''वे पवित्र वस्तुओं को देखने को क्षण भर के लिए भी भीतर आने न पाएं, कहीं ऐसा न हो कि वे मर जाएं।'' ''कि मर जाएं'' और ''कि वे मर जाएं'' को अपने मन में रेखांकित कर लें। तज़्बू के भीतर केसामान की पवित्र वस्तुएं ''पवित्र भूमि'' की अवधारणा का शिलालेख थीं। वाचा का सन्दूक सब से पवित्र था।

अफसोस, समय के साथ, उस पवित्र के साथ निरंतर सज़्पर्क से यह सामान्य जगह लगने लगी। आराधना में हमारे साथ भी ऐसा ही हो सकता है। वाचा केसन्दूक के संबंध में इस्राएलियों के साथ भी ऐसा ही हुआ था।

इस्राएलियों के कनान देश में पहुंचने पर तज़्बू शीलो में स्थापित किया गया था। एक दिन, इस्राएली सेना सन्दूक लेने के लिए आ गई (1 शमूएल 4:4)। पलिश्तियों के साथ एक युद्ध में, उनके चार हज़ार लोग मारे गए (1 शमूएल 4:2)। उन्होंने फैसला किया कि यदि वे ''सन्दूक-वाले-परमेश्वर'' को युद्ध में साथ ले जाएं, तो भाग्य उनका साथ देगा। परमेश्वर को उनका यह घटिया उद्देश्य अच्छा नहीं लगा। अगले युद्ध में *तीस हज़ार* इस्राएली मारे गए, और सन्दूक पलिश्तियों के हाथ में चला गया (1 शमूएल 4:10, 11)।

सात महीने तक सन्दूक पलिश्तियों के पास रहा और उतनी देर तक उन पर विपदा ही रही। उनकी मूर्तियां नष्ट हो गईं, उन पर चूहों की मरी पड़ी और बहुत से लोगों के गिलटियां निकल आईं।[3] पलिश्तीनी टोन्हा करने वाले अगुवों ने लोगों को सन्दूक (और सोने के उपहार) को एक नई गाड़ी (वाज़्यांश ''एक नई गाड़ी'' पर ध्यान दें [1 शमूएल 6:7]) इसमें देश से बाहर भेज देने की सलाह दी (1 शमूएल 6:7, 8)।

गायें सन्दूक को खींचकर यहूदा की सीमाओं में एक इस्राएली नगर बेतशेमेश (यहोशू 21:16) ले गईं। सन्दूक देखकर इस्राएली आनंदित हुए, परन्तु उनमें किसी प्रकार का भय अथवा पवित्र भूमि पर खड़े होने का कोई एहसास न मिला। वे सन्दूक के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए और भीतर झांकने के लिए प्रायश्चिज़ का ढकना उठा दिया। उसी समय, वे वहीं मर गए![4] (1 शमूएल 6:19)। भयभीत, बेतशेमेश के लोगों ने सन्दूक को पंद्रह मील दूर किर्यत्यारीम नगर में भेज दिया। इसे अबीनादाब नामक आदमी के घर रखा गया (1 शमूएल 7:1)।

शमूएल की बाद की पूरी सेवकाई, शाऊल के शासन, और दाऊद के शासन के आरज़्भिक भाग तक सन्दूक वहीं रहा। वहां सज़र से अधिक वर्ष रहने के बाद,[5] धूल जमा होने पर, जब दाऊद ने लोगों से कहा, ''हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहां ले आएं; ज़्योंकि शाऊल के दिनों में हम उसके समीप नहीं जाते थे।''

> फिर दाऊद ने एक और बार इस्राएल में से सब बड़े वीरों को, जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया, जब दाऊद और जितने लोग उसके संग थे, वे सब उठकर यहूदा के बाले [किर्यत्यारीम का दूसरा नाम (यहोशू 15:9)] नामक स्थान से चले, कि परमेश्वर का वह सन्दूक ले आएं, जो करूबों पर विराजने वाले सेनाओं के यहोवा का कहलाता है (2 शमूएल 6:1, 2)।

परन्तु आश्चर्य की बात है, 2 शमूएल 6:3 के पहले भाग में हम पढ़ते हैं, ''तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहने वाले अबीनादाब के घर से निकाला।'' *''एक नई गाड़ी पर''?* उन्होंने सन्दूक को नई गाड़ी पर ज़्यों रखा?[6] ज़्या किसी ने यह बताया था कि इस्राएल देश में सन्दूक को ऐसे ही लाया गया था?[7] ज़्या किसी भारी

चीज को ले जाने के लिए यही सही ढंग अपनाया जाता था? दाऊद और दूसरे लोगों ने तैयारी ठीक ढंग से नहीं की थी। उन्हें कहात के पुत्रों द्वारा सन्दूक को डंडों से कंधे पर ले जाने का महत्व या तो पता नहीं था, या उन्होंने इसे मान्यता नहीं दी, जिस कारण परिणाम विनाशकारी हुए।

कहानी में, आगे हम पढ़ते हैं कि, ''अबीनादाब के उज्जा और अहह्यो नाम दो पुत्र उस नई गाड़ी को हांकने लगे''[8] (2 शमूएल 6:3ख)।

> और उन्होंने उसको परमेश्वर के सन्दूक समेत टीले पर रहने वाले अबीनादाब के घर से बाहर निकाला; और अहह्यो सन्दूक के आगे आगे चला। और दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के आगे सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे और वीणा, सारंगियां, डफ, डमरू, झांझ बजाते रहे (2 शमूएल 6:4, 5)।

दृश्य को अपने मन में बिठाएं। गाड़ी दो पहियों वाला एक छोटे छकड़े को कहा गया है न कि बहुत बड़ी गाड़ी को।[9] सन्दूक गाड़ी पर रखकर, बैलों द्वारा खींचा जा रहा था। अहह्यो बैलों की अगुआई करते हुए, गाड़ी के आगे-आगे चल रहा था, जबकि उज्जा यह देखने के लिए कि सब ठीक-ठाक है, गाड़ी के साथ चल रहा था। दाऊद और तीस हजार और लोग गाड़ी के इर्द-गिर्द नाच, गा, चिल्ला, और बजा रहे थे। यह जश्न का माहौल था! परमेश्वर को प्रसन्न जो करना था, है? गलत!

अचानक, जश्न एकदम से रुक गया। कीदोन के खलिहान में जुलूस पहुंचने पर[10] बैलों को ठोकर लग गई। गाड़ी डोलने लगी, और सन्दूक खिसकने लगा। फुरती से,

> ... उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, ज़्योंकि बैलों ने ठोकर खाई। तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया (2 शमूएल 6:6, 7)।

मैंने हाल ही में कॉलेज के छात्रों के एक समूह को यह कहानी सुनाई, जिन्होंने पहले भी सुनी थी परन्तु वे चौंक गए। वे जानना चाहते थे, ''परमेश्वर ने उज्जा को ज़्यों मारा? वह तो सन्दूक को किसी प्रकार की हानि होने से रोकने के लिए गिरने से बचाने की कोशिश कर रहा था!''[11] मेरे छात्र परमेश्वर के क्रोध और तुरन्त न्याय पर चौंकने वाले पहले या अंतिम लोग नहीं थे। परन्तु, गिनती की पुस्तक में परमेश्वर ने ज़्या कहा था? सन्दूक को सोने के डंडों में डालकर ले जाने का काम कहात के पुत्रों का था, *''पर किसी पवित्र वस्तु को न छुएं, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं''* (गिनती 4:15)।

हम उज्जा की कहानी से चौंक जाते हैं, ज़्योंकि हम में उज्जा की मानसिकता है। हम प्रभु की सेवा के समय मान लेते हैं, कि भली मनसा ही काफी है, कि जब तक हम सच्चे

मन से करते हैं, परमेश्वर हमारी हर भेंट को स्वीकार कर लेगा। उज्जा पर कभी किसी ने कपटी होने या गलत मनसा रखने का आरोप नहीं लगाया, परन्तु फिर भी उसका अंत बहुत बुरा हुआ।

इस नाजुक पल में जब दाऊद देश को परमेश्वर की सोच के अनुसार लाने को दृढ़ संकल्प था तो प्रभु ने इस तथ्य के महत्व को याद दिलाने के लिए कि आराधना कोई ज़ेल नहीं है कि हम अपनी सहूलियत के अनुसार इसके नियमों को बदल सकें, एक स्पष्ट बात चुनी। उसे (और हमें) पता होना चाहिए कि आराधना बहुत ही गंभीर कार्य है, हम उसके पास अपनी शर्तों से नहीं बल्कि उसकी शर्तों के अनुसार आते हैं। उसकी उपस्थिति में आना भज़्ति, भय तथा पूरी अधीनता से होना चाहिए।[12]

उज्जा को अपने कदमों में मरा हुआ गिरा देखकर, दाऊद के मन में अलग-अलग भावनाएं उठने लगीं। पहले तो, ''दाऊद *अप्रसन्न* हुआ, इसलिए कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था'' (2 शमूएल 6:8)। दाऊद की पहली प्रतिक्रिया क्रोध भरी और घबराहट भरी थी, परन्तु शीघ्र ही दाऊद जैसे भयभीत हो गया: ''और उस दिन दाऊद यहोवा से *डरकर* कहने लगा'' (2 शमूएल 6:9क)। दाऊद के परमेश्वर से डरने की बात पहली बार यहीं पढ़ने को मिलती है। अंत में, दाऊद अनिश्चितता से भर गया: ''यहोवा का सन्दूक मेरे यहां ज़्योंकर आए?'' (2 शमूएल 6:9ख)। गती[13] ओबेदेदोम का घर पास ही था। दाऊद सन्दूक को वहां छोड़कर सिर हिलाता हुआ यरूशलेम में लौट गया।

यदि हम अपने साथ ईमानदार हैं, तो हमें मानना पड़ेगा कि अपनी आराधना को परमेश्वर की आशीष पाने की उज़्मीद में हम अपनी ''नई गाड़ियां'' बनाते हैं, चाहे वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो या न हो। समय हुआ तो हम शिक्षा की ''नई गाड़िया'' पर चर्चा करेंगे जो लोगों ने आज परमेश्वर की आराधना में इस्तेमाल करने के लिए बनाई हैं, जैसे आराधना में धूप और मोमबज़ियां जलाना, आराधना चलाने के लिए विशेष याजकाई या पादरी वर्ग, प्रभु भोज की जगह मास का विकल्प, प्रभु भोज को प्रभु के दिन के बजाय कुछ विशेष अवसरों पर लिया जाना, सार्वजनिक आराधना में स्त्रियों द्वारा प्रमुख भूमिका निभाना, आराधना में वाद्य संगीत,[15] और ऐसी कई दूसरी बातें।[16]

परन्तु आइए इसे जितना निजी और व्यावहारिक[17] बना सकते हैं, बनाएं। न तो दाऊद और न आकान ने परमेश्वर को इतनी गज़्भीरता से लिया। नई गाड़ी सृष्टि के प्रभु के सज़्मान तथा भय में कमी को दिखाती है। ज़्या यह सत्य नहीं है कि हममें से कई लोगों ने अप्रासंगिकता की अपनी नई गाड़ियां बना ली हैं? अज़्सर परमेश्वर तक पहुंचने के अपने ढंग को हम बड़ी सहजता से लेते हैं। हम लापरवाही से प्रार्थना करते, गाते, परमेश्वर का वचन पढ़ते और प्रभु ज़ोज में भाग लेते हैं। उज्जा को इसी उल्लंघन के कारण अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा था। संदेह न करें; हमारे आत्मिक प्राण जा सकते हैं।

> ... जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। ... ज़्योंकि जो कोई खाते-पीते समय प्रभु

> की देह को न पहचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दंड लाता है। इसी कारण ... बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए [अर्थात मर गए] हैं (1 कुरिन्थियों 11:27, 29, 30)।

आश्चर्य की बात यह नहीं कि परमेश्वर ने उज्जा को मारा; बल्कि आश्चर्य तो यह है कि वह हम सब को नहीं मारता। आराधना एक गंभीर कार्य है (नीतिवचन 1:7; हबज़्कूक 2:20)

छोटी-छोटी बातों का ध्यान, आराधना के आनन्द को कम नहीं करता (2 शमू. 6:12-19;1 इति. 15:1-16:3, 7-36, 43)

कुछ लोगों को लगता है कि ''नियम'' की बातों की परवाह करने से धर्म अपने आप ही निष्फल हो जाता है, अर्थात पवित्र शास्त्र के ''लिखे'' पर जोर देने से व्यक्ति का मन नकारात्मक ढांचे में बंद हो जाता है, और आनन्दपूर्वक आराधना करने का एकमात्र ढंग बाइबल की बातों पर कम जोर देकर या उनकी उपेक्षा करके ''अपनी इच्छा से'' करना ही है। सन्दूक को यरूशलेम में ले जाने की कहानी के अंत से पता चलता है कि यह निष्कर्ष सही नहीं है।

दाऊद को ओबेददोम के घर से सन्दूक लेकर गए तीन महीने हो चुके थे (2 शमूएल 6:11)। इस दौरान वह काफी व्यस्त रहा था। उसने महल का काम शुरू किया हुआ था; उसका परिवार भी बढ़ गया था; तथा पलिश्तियों के विरुद्ध कई निर्णायक युद्ध भी लड़े थे (तु. 1 इतिहास 14)।

तीन महीने बाद, किसी ने दाऊद के पास आकर उसे बताया कि ''परमेश्वर के सन्दूक के कारण'' (2 शमूएल 6:12क) ओबेददोम के घराने को बहुत आशिष मिली है। जब दाऊद ने इस बात पर और इस तथ्य पर विचार किया कि उसके अपने जीवन में भी इसी दौरान आशीष मिली है, तो उसने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर का क्रोध कम हो गया है। उसने सन्दूक को यरूशलेम में वापस लाने की दोबारा कोशिश करने का फैसला किया।

परन्तु इस बार उसने आवश्यक योजनाएं बनाकर तैयारी की। पहले तो, उसने विशेष स्थान अर्थात यरूशलेम में एक तज़्बू तैयार किया, जिसमें लाकर सन्दूक को रखा जाना था।[18] दूसरा, और सबसे महत्वपूर्ण, उसने विशेष लोग तैयार किए। दाऊद ने इस बार होमवर्क अच्छा किया। उसने ''पुरानी पारिवारिक बाइबल का अध्ययन किया'' और उसमें से ढूंढ़ा कि सन्दूक के बारे में मूसा ने ज़्या कहा है, और विशेषकर यह कि मूसा ने सन्दूक को दूसरी ले जाने के बारे में ज़्या कहा है। उसने निर्गमन 25, गिनती 4 और 7, और व्यवस्थाविवरण 10 अध्याय ढूंढ़े। उसने पढ़ा कि कहात के लेवी घराने के पुरुषों का काम सन्दूक को अपने कंधों पर डंडों पर रखकर *ले जाना* था। दाऊद ने निश्चय किया कि वह इस बार वैसे ही करेगा जैसे *परमेश्वर* ने कहा है।

2 शमूएल 6:12 का पिछला भाग कहता है ''तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर के सन्दूक

को ओबेददोम के घर से दाऊदपुर में आनंद के साथ पहुंचाया।'' 1 इतिहास 15 अध्याय इसका विवरण देता है, ''तब दाऊद ने कहा, लेवियों को छोड़ और किसी को परमेश्वर का सन्दूक उठाना नहीं चाहिए, ज़्योंकि यहोवा ने उनको इसीलिए चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएं और उसकी सेवा टहल सदा किया करें'' (आयत 2)। दाऊद ने याचिकों तथा लेवियों के अगुओं को इकट्ठा किया तथा उन्हें निर्देश दिए:

> ... अपने भाइयों समेत अपने अपने को पवित्र करो, कि तुम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचा सको जिसको मैंने उसके लिए तैयार किया है। ज़्योंकि पहिली बार तुम ने उसको न उठाया इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, ज़्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे (1 इतिहास 15:12, 13)।

''हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे'' शब्दों को रेखांकित कर लें। अन्य शब्दों में, ''परमेश्वर ने हमारी आराधना में आशीष इसलिए नहीं दी, ज़्योंकि हमने उसके निर्देशों का अक्षरश: पालन नहीं किया''। जिसे दाऊद ने ''नियम'' कहा, वे पांच सौ साल पूर्व मूसा द्वारा दिए गए थे, परन्तु आज भी उसी तरह लागू थे। कुछ लोगों का मानना है कि हमें ''समय की आवश्यकता के अनुसार'' परमेश्वर के नियमों को बदलने, और उनमें जोड़ने का अधिकार है। दाऊद ने सीखा, और हमें भी सीखना चाहिए, कि अपने निर्देशों को बदलने का अधिकार केवल परमेश्वर को है। हमें वह अधिकार नहीं है।

नए नियम में यीशु ने कहा कि वचन के अनुसार आराधना करने के लिए दो बातें आवश्यक हैं। उसने कहा, ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें'' (यूहन्ना 4:24)। हमें परमेश्वर के वचन (सच्चाई, यूहन्ना 17:17) के अनुसार ही आराधना करनी चाहिए, और ऐसा करते समय हमारा व्यवहार उचित (आत्मा) होना चाहिए। आराधना का मन होने साथ-साथ परमेश्वर द्वारा दी गई रूपरेखा का पालन करना भी आवश्यक है। हमें सही बातें सही ढंग से करनी चाहिए।

इस सच्चाई से मसीह की कलीसियाओं की आराधना सभाओं की बहुत सी बातों का पता चल जाता है। हम हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज ज़्यों लेते हैं, और सप्ताह के पहले दिन ही ज़्यों लेते हैं? केवल पुरुष ही ज़्यों प्रचार और प्रार्थना में अगुआई करते हैं? हम केवल कंठ संगीत का अर्थात बिना साज या वाद्य के ज़्यों गाते हैं? ज़्योंकि नए नियम में परमेश्वर ने हमें यही करने के लिए कहा है। कोई आपज़ि कर सकता है, ''पर यह तो बहुत छांट करने वाला होना है। निश्चय ही ऐसी महत्वहीन बातों की परमेश्वर परवाह नहीं करता।'' 2 शमूएल 6 और 1 इतिहास 13-15 से पता चलता है कि परमेश्वर सोने के कड़ों, ले जाने वाले डंडों, सन्दूक के ढकने और उसे ले जाने वाले व्यज़्ति के बारे में बताने की तरह ऐसी ''महत्वहीन, छोटी-छोटी, छांटू बातों की परवाह करता है।'' यदि परमेश्वर इन बातों की परवाह करता है, तो हमें भी परवाह करनी चाहिए!

परन्तु इस समय हमारा प्रश्न है कि ''ज़्या आराधना की छोटी-छोटी बातों पर जोर देने से आराधना का आनन्द कम नहीं हो जाता?'' आइए इस प्रश्न का उज़र देने के लिए कहानी को समाप्त करते हैं। जब हर कोई तैयार था ...

> ... याजकों और लेवियों ने अपने अपने को पवित्र किया, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक ले जा सकें। तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी, लेवियों ने सन्दूक को डंडों के बल अपेन कंधों पर उठा लिया (1 इतिहास 15:14, 15)।

2 शमूएल 6:13 में एक आकर्षक विवरण जोड़ा गया है: ''जब यहोवा के सन्दूक के उठाने वाले छ: कदम चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया।'' याद रखें कि यह किसी को मालूम नहीं था कि इस दूसरे प्रयास का अंत पहले जैसा होगा या यह प्रयास सफल रहेगा। यदि मुझे सन्दूक को ले जाने के लिए चुना गया होता, तो मेरे लिए एक दोहरा सज़्मान होता। ''मैं कौन हूं? जो उस सन्दूक को ले जाऊं जिसने उज्जा को मारा था? तुम मजाक कर रहे हो!''

आप सन्दूक के पास जाने वालों का गिरता पसीना नहीं दिखाई देता? उन्होंने डंडों को स्पर्श करने के लिए अपनी अगुंलियां लगाईं और पीछे को उछल गए। कुछ नहीं हुआ, सो घबराकर उन्होंने अपने आप को संभाला, फिर बड़ी सावधानी से सन्दूक को उठाया और धीरे-धीरे अपने कंधों पर रखा। विनाश ने किसी को मारा नहीं, सो उन्होंने बड़ी सावधानी से कदम उठाए और अगला कदम बढ़ाया, इस आश्चर्य से कि कहीं यह उनका आखिरी कदम न हो। उन्होंने दूसरा कदम बढ़ाया ... फिर तीसरा ... चौथा ... पांचवां ... छठा। उन्हें कुछ नहीं हुआ था! धीरे-धीरे उन्होंने सन्दूक को नीचे रखा, सांस ली, और खुशी से चिल्ला उठे। इस बार सब कुछ ठीक-ठाक था!

दाऊद ने सन्दूक को रखने के लिए न केवल जगह ही तैयार की बल्कि सन्दूक को ले जाने के लिए लोग भी तैयार किया; उसने बलिदान का भी प्रबंध किया; वहीं पर उसने ''एक बैल और एक पाला-पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया'' (2 शमूएल 6:13)। दाऊद की भेंट के अलावा, लेवियों ने विशेष बलिदान किया, ज़्योंकि उन्होंने अपने गोत्र के लिए इस घटना को महत्वपूर्ण माना: परमेश्वर दिखा रहा था कि वह उनके साथ है; कौम के जीवन में उनकी स्थिति फिर बहाल हो रही थी। ''जब परमेश्वर ने लेवियों की सहायता की जो यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाने वाले थे, तब उन्होंने सात बैल और सात मेढ़े बलि किए'' (1 इतिहास 15:26)।

अब परमेश्वर के साथ उनके सज़्बन्ध में सब कुछ सही था। परमेश्वर को न केवल उनके मनों में बल्कि उसकी इच्छा से जुड़े रहने में भी महिमा मिली थी। दोष तथा पश्चाज़ाप से छुटकारे की भावना से दाऊद जैसे पागल हो गया था।

> और दाऊद ... यहोवा के सज़्मुख तन मन से नाचता[18] रहा (2 शमूएल 6:14)।

इस प्रकार सब इस्राएली यहोवा की वाचा के सन्दूक को जयजयकार करते, और नरसिंगे, तुरहियां और झांझ बजाते और सारंगियां और वीणा बजाते हुए ले चले (1 इतिहास 15:28)।

यरूशलेम में परमेश्वर का सन्दूक आ जाने पर कितनी उज़ेजना भर गई होगी! दाऊद सब को बता देना चाहता था कि इस्राएल का वास्तविक राजा कौन है। दाऊद ने शाही लिबास नहीं पहना या शाही शान से मार्च नहीं किया था। इसके विपरीत उसने केवल सन के कपड़े के ऊपर सफेद एपोद पहना था,[19] और सन्दूक के पास प्रभु की महिमा करते हुए नाच रहा था। यरूशलेम को अपनी राजधानी बनाने के समय दाऊद ने कोई परेड नहीं कराई थी परन्तु यहोवा के लिए वह एक विजयी प्रवेश चाहता था!

जब वे तज़्बू के पास पहुंचे दाऊद द्वारा कराए गए, तो सन्दूक को उसमें बड़ी श्रद्धा से रख दिया गया। फिर, दाऊद ने अपने पापों और लोगों के पापों के लिए पाप बलि, और इस बात के जश्न के लिए कि परमेश्वर और उसके लोगों में संगति हो गई है, मेल बलि दी। इस अवसर के लिए दाऊद ने परमेश्वर के सज़्मान, प्रतिष्ठा, सामर्थ, महिमा और सामर्थ पर एक भजन तैयार किया (1 इतिहास 16:8-36. तुलना 16:8-22 और भजन संहिता 105:1-15. तु. 16:23-33 और भजन संहिता 96. तु. 16:34-36 और भजन संहिता 106:1, 47, 48)। यह जबर्दस्त गीत इस प्रकार समाप्त होता है, ''अनादिकाल से अनन्तकाल तक इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है'' (1 इतिहास 16:36क)। ''तब सब प्रजा ने आमीन कहा: और यहोवा की स्तुति की'' (36ख)। दाऊद ने अपने हाथ फैलाए और ''यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया'' (2 शमूएल 6:18)। फिर उसने हर परिवार को विशेष सज़्मान दिया, और इस ज्ञान से आनन्दित होते हुए कि परमेश्वर फिर अपने लोगों के साथ था, सब अपने-अपने घर लौट गए।

ज़्या नियम को सज़्ती से मानने से दाऊद और दूसरे आराधकों का आनंद खत्म हो गया? हम 1 इतिहास 15; 16 के साथ 2 शमूएल 6 का अन्तिम भाग इस तथ्य से प्रभावित हुए बिना नहीं पढ़ सकते कि व्यवस्था की सभी बातों को मानने से उनका आनन्द कम नहीं हुआ बल्कि बढ़ा ही। दोनों बार दाऊद द्वारा सन्दूक को यरूशेलम में लाने से पहले में जश्न मनाए गए थे। परन्तु पहला जश्न शोक में बदल गया था ज़्योंकि लोगों ने परमेश्वर को ''नियम के अनुसार न'' खोजा था (1 इतिहास 15:13)। दूसरा जश्न आनन्द में समाप्त हुआ ज़्योंकि उन्होंने वही किया, जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा था।

ढंग की चिंता रीतिवाद में बदल सकती है, परन्तु ऐसा हो यह आवश्यक नहीं है। अपने आप को आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना में, परमेश्वर की ''लिखे हुए'' से जुड़े रहने वालों को रोकने वाले के बजाय स्वतन्त्र करने वाला अनुभव मिल सकता है। जब आपको मन में पता हो कि आपकी आराधना परमेश्वर को भा रही है, तो आप पूरे मन से परमेश्वर की आराधना करने को स्वतन्त्र हैं!

अर्थपूर्ण आराधना के लिए तैयारी होनी आवश्यक है (1 इति. 15:2-24; 16:1-7, 37-42)

2 शमूएल 6 और 1 इतिहास 15; 16 को छोड़ने से पहले, मैं दो सच्चाइयों पर जोर देना चाहूंगा। पहली सच्चाई, निजी हो या सार्वजनिक, अर्थपूर्ण आराधना के लिए मन तथा जीवन की तैयारी आवश्यक है।

पहले, हमने ध्यान दिया था कि दाऊद ने सन्दूक के लिए जगह, सन्दूक को लाने वाले लोग, और बलिदान के लिए सामान तैयार किया था। पहला इतिहास 15:16-24 तैयारी के बारे में बताता है। विशेष कार्यों के लिए विशेष लोगों का चयन किया गया था, जैसे हम अपनी आराधना के अलग-अलग भागों के लिए अलग-अलग लोगों को काम सौंपते हैं। सन्दूक को लाने वालों के अलावा, गाने और बजाने वालों, सन्दूक की सुरक्षा के लिए द्वारपालों तक का प्रबन्ध था। आयत 22 पर विशेष ध्यान देना लाभदायक है: ''और राग उठाने का अधिकारी कनन्याह ... प्रधान था, वह राग उठाने के विषय शिक्षा देता था, ज़्योंकि वह निपुण था।'' आराधना की योजना बनाने के समय हमें अपने पूरे प्रयास करने चाहिए, ज़्योंकि आराधना तन-मन होना आवश्यक है।

पहला इतिहास 16 कहता है कि यरूशलेम में सन्दूक को रखने के बाद, दाऊद ने अपनी तैयारी जारी रखी, इस बार उसकी तैयारी हर रोज़ होने वाली आराधना की थी। ''तब उसने कई लेवियों को इसलिए ठहरा दिया, कि यहोवा के सन्दूक के सामने सेवा टहल किया करें, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की चर्चा और उसका धन्यवाद और उसकी स्तुति किया करें'' (आयत 4)।[20]

पिता जी कहा करते थे, ''जो भी काम करो उसे अच्छी तरह करो।'' हम में से बहुत से लोग इस बात की समझ रखते हैं कि ये सिद्धांत जीवन के और क्षेत्रों में लागू होता है। परन्तु कितनी हैरानी की बात है कि हमें लगता है कि हम इस बात की ओर ध्यान न दिए बिना आराधना में आएं और फिर भी परमेश्वर प्रसन्न हो जाए। शायद हम शनिवार देर रात तक जागकर, रविवार सुबह देर से उठकर, प्रार्थना भवन में देरी से पहुंचकर, बैंच पर ऊंघते हुए आराधना करने के बावजूद आराधना में ''से कुछ पाने'' की उज़्मीद रखते हैं।

अर्थपूर्ण सेवा के लिए तैयारी आवश्यक है। आराधना करने का स्थान तैयार होना आवश्यक है। प्रभु भोज तैयार होना आवश्यक है। गाने तथा प्रार्थना में अगुआई करने वाले का तैयार होना आवश्यक है। प्रचारक का तैयार होना आवश्यक है। सार्वजनिक आराधना सभा या सेवा के बारे में लिखते हुए पौलुस ने कहा है कि ''सारी बातें सज़्यता और क्रमानुसार की जाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:40)।

परन्तु सबसे आवश्यक यह है कि परमेश्वर के सिंहासन के सामने आने के लिए हर पुरुष या स्त्री का आराधना के लिए *तैयार* होकर आना आवश्यक है।

यदि हमें आराधना से कुछ प्राप्त नहीं होता, तो हमें पहले अपने हृदयों को जांचना चाहिए (2 शमू. 6:16, 20-23; 1 इति. 15:29; 16:43)

2 शमूएल 7 में जाने से पहले मैं जिस दूसरी सच्चाई पर जोर देना चाहता हूं वह यह है कि यदि हमें आराधना से कुछ प्राप्त नहीं होता, तो हमें अपने ही अंदर झांकने की आवश्यकता है।

2 शमूएल 6:16 में हम पढ़ते हैं, ''जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते-कूदते देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना।'' आपको मीकल की दुःखद कहानी याद होगी। शाऊल ने उसे दाऊद को सौंप दिया था; फिर, जब दाऊद भगौड़ा हो गया तो शाऊल ने उसका ज़्याह किसी दूसरे से कर दिया। जब अब्नेर ने पूरे इस्राएल पर दाऊद के राजा बनने के सम्बन्ध में उससे बात की, तो दाऊद ने विनती की कि मीकल उसे लौटा दी जाए। जब मीकल को उसके दूसरे पति से छीन लिया गया, तो वह रोता हुआ उसके पीछे तब तक भागा, जब तक उसे वापस लौटने को मजबूर नहीं कर दिया। अब हम इस दर्दनाक कहानी को समेटते हैं।

सन्दूक के नगर के फाटकों में से आने पर, मीकल ने महल की खिड़की से झांका ''और उसे मन ही मन तुच्छ जाना।'' 1 शमूएल 18:20 में हम पढ़ते हैं, ''शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से *प्रीति रखने लगी*।'' परन्तु साल बीतते गए, और प्रेम की ज्वाला ठंडी पड़ चुकी थी; केवल जले हुए कोयले ही शेष रह गए थे। अब ''उसने उसे तुच्छ जाना।''

जश्न खत्म होने के बाद, दाऊद ''अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया'' (1 इतिहास 16:43)। उस के जज़्बात और आत्मिकता पूरे उफान में थे; वह इसे अपने परिवार में बांटना चाहता था। ''तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिए लौटा'' (2 शमूएल 6:20क)। उसकी भेंट द्वार पर क्रुद्ध मीकल से हो गई। उसके स्वर में व्यंग्य था; ''आज इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की लौंडियों के सामने ऐसा उघाड़े हुए था, जैसा कोई निकज़्मा अपना तन उघाड़े रहता है, तब ज़्या ही प्रतापी देख देख पड़ता था'' (2 शमूएल 6:20ग)। ''तन उघाड़े रहता है'' का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि दाऊद नंगा था (उसने वस्त्र के नीचे एक चोगा पहना हुआ था)।[21] ''निकज़्मा'' वाज़्यांश मुज़्य है; मीकल की नजर में दाऊद ने अपने आप को मूर्ख या निकज़्मा बनाया था। उसने जिन बातों के लिए उसे तुच्छ जाना, उन्हीं से वह महान बन गया जो परमेश्वर के लोगों और उसके प्रति जोश के साथ उसकी पहचान है।

दाऊद का चेहरा उतर गया; उसका जोश ठंडा पड़ गया। उसने जवाब दिया कि परमेश्वर ने उसे चुना और ऊंचा किया है इसलिए वह अपने पूरे मन से उसकी आराधना करेगा, चाहे इसके लिए उसे मूर्ख ही बनना पड़े। अंततः, परमेश्वर उसे सबकी नजर में ऊंचा करेगा।

यह संक्षिप्त सा परन्तु दुःखद दृश्य 2 शमूएल 6:23 के इस कथन के साथ समाप्त होता है, ''और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान न हुई।''[22] इससे

यह संकेत मिल सकता है कि परमेश्वर ने उसे बांझ होने का श्राप दिया[23]; या यह भी हो सकता है कि वह और दाऊद पति-पत्नी के रूप में इकट्ठे नहीं रहे। दोनों बातें भी हो सकती हैं।

हम इस दु:खद पारिवारिक नाटक तथा सज़्बन्धों के बिगड़ने पर बहुत कुछ कह सकते हैं। परन्तु इस समय आइए आराधना के विषय पर ही बात करते हैं। सन्दूक को यरूशलेम में लाना इस्राएल के इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक थी। मीकल यरूशलेम में लौटने वाले जुलूस का स्वागत करने वाली भीड़ में भी हो सकती थी। परन्तु मीकल के मन की स्थिति के कारण इस महान अवसर ने उसे उत्साहहीन कर दिया। उसका जवाब केवल आलोचना करना था कि ''दाऊद, तुम तो मूर्ख लग रहे थे!''

आराधना की आलोचना करना आज प्रसिद्ध खेल बन गया है। सांकेतिक तौर पर कहें तो हम आराधना में अगुआई करने वालों के कार्ड बनाते हैं: ''मैं गाने में अगुआई करने वाले को 6, प्रार्थना में अगुआई करने वाले को 3, और प्रचारक को 5 अंक देता हूं, सज़्पूर्ण आराधना को माइनस 2 ही दूंगा!'' आराधना के बारे में ऐसा विचार रखने के जाल में फंसना आसान है: ''यदि आराधना *मुझे* पसन्द आ गई तो यह अच्छी थी; यदि *मुझे* पसन्द नहीं आई तो बुरी थी।''

हमें हर समय याद रखना चाहिए कि, पहले और सर्वप्रथम आराधना परमेश्वर को *मन* का जवाब है। यदि मुझे आराधना ''से कुछ प्राप्त नहीं होता'' तो समस्या मेरे अपने मन की है, न कि उनकी जिन्होंने आराधना की योजना बनाई तथा उसमें अगुआई की। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम आलोचना भरी आंखों से दूर से खड़े होकर देखने वाली मीकल की तरह न बनें।

आराधना में साफ नीयत का होना ही काफी नहीं है (2 शमू. 7:1-17; 1 इति. 17:1-15)

2 शमूएल 7 पर आकर हमें यह महत्वपूर्ण सबक मिलता है कि आराधना के लिए केवल साफ़ नीयत का होना ही काफी नहीं है।

2 शमूएल 6 तथा 7 के दौरान, दाऊद ने महल बनाने तथा युद्ध लड़ने का काम समाप्त कर लिया था।[24] अंतत:, एक दिन दाऊद अपने सुंदर नए घर में आराम और आनंद कर रहा था। परन्तु सतुष्ट होने की ओर ध्यान देने पर उसका माथा ठनका; ''मैं तो शानदार घर में रहता हूं, पर परमेश्वर का सन्दूक तज़्बू में रहता है!'' उसने नातान को बुलाया जो उसका मित्र, सलाहकार, और भरोसे योग्य बन चुका था।[25] जब उसने नातान को अपने विचार बताए, तो नातान ने उसकी बात का बड़े जोश से जवाब दिया; ''जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर: ज़्योंकि यहोवा तेरे संग है'' (2 शमूएल 7:3)।

परन्तु उसी रात परमेश्वर ने नातान को बताया कि उसने दाऊद की योजनाओं को स्वीकृति देने में बहुत जल्दबाजी की है। उन्हें पहले प्रभु से पूछ लेना चाहिए था कि वह परियोजना *उसकी* स्वीकृति से है या नहीं। हमारे लिए यहां कई सबक मिलते हैं। पहला यह

है कि बहुत अच्छे मित्र ज़ी हमें गुमराह कर सकते हैं, चाहे उनका आत्मिक कद कितना भी ज़्यों न हो (नातान परमेश्वर का एक नबी था)। दूसरा सबक (और जिस पर इस समय हम जोर दे रहे हैं) यह है कि हमारी नीयत चाहे कितनी भी साफ ज़्यों न हो, हो सकता है कि हमारी योजनाएं परमेश्वर द्वारा स्वीकृत न हों।

आराधना में किसी नई बात को शामिल करने के लिए लोगों के तर्क कोई नई बात नहीं हैं, ''ज़्योंकि प्रभु का सज़्मान करने के लिए मेरी नीयत साफ है इसलिए निश्चय ही वह उसे पसन्द आएगी।'' परन्तु प्रभु को ज़्या पसन्द है, इसके बारे में *जानने* का हमारे पास एक मात्र ढंग उसके वचन में दी गई बात को पढ़ना है। हमें *लग* सकता है कि इस या उस बात से प्रभु प्रसन्न होगा, परन्तु मैं फिर कहता हूं , प्रभु के प्रसन्न होने का *पता* हमें बाइबल में से पढ़कर ही चल सकता है (यशायाह 55:8; नीतिवचन 14:12)।

नातान के लिए अगले दिन दाऊद के पास आकर यह कहना, ''इस परियोजना में तुन्हें प्रोत्साहित करके मैंने गलत किया'' कठिन होगा! परन्तु नातान परमेश्वर का नबी था और नबी का काम कठिन से कठिन कामों को करना होता था। उसने दाऊद के पास आकर उसे परमेश्वर का संदेश दे दिया। 5 से 16 आयतों में लिखित वह संदेश 2 शमूएल में सबसे महत्वपूर्ण और पुराने नियम की बाइबल में एक महत्वपूर्ण हवाला है।

वास्तव में दाऊद से परमेश्वर ने कहा, ''*मैंने* तुझे अपने लिए कोई घर बनाने के लिए नहीं कहा। मैं इसके बिना ही ठीक हूं।''[26] उसने स्पष्ट कहा, ''मेरे निवास के लिए तू घर बनवाने न पाएगा'' (1 इतिहास 17:4)। अन्य शज़्दों में, ''तेरी मंशा तो सही हो सकती है, पन्तु मेरी ऐसी कोई इच्छी नहीं है।''

परमेश्वर ने दाऊद के स्वप्न के लिए कई कारणों से ''न'' कहा। बाद में दाऊद ने यह लिखा:

> परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, तू ने लहू बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं, इसलिए तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, ज़्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लहू बहाया है। देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शांत पुरुष होगा; और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शांति दूंगा; उसकी नाम सुलैमान होगा, और उसके दिनों में मैं इस्राएल को शांति और चैन दूंगा। ... (1 इतिहास 22:8-10)

दाऊद के लिए परमेश्वर की प्राथमिकताएं और थीं, दाऊद को साम्राज्य बनाना था (नोट 1 राजा 5:3), और उसे अपना परिवार बनाना था।

परमेश्वर द्वारा हमारे सपनों को ''न'' कहने पर कठिनाई नहीं होती? हम अपनी योजनाएं बनाते हैं, हमारे इरादे बड़े ऊंचे होते हैं, हमें बिल्कुल नहीं लगता कि परमेश्वर इसकी स्वीकृति नहीं देगा, परन्तु फिर वे योजनाएं पूरी नहीं हो पाती। वे योजनाएं मसीही जीवन साथी को ढूंढ़कर मसीही जीवन बिताने, प्रभु के भय में बच्चों को जन्म देने तथा उनका पालन-पोषण करने या हम अपने जीवनों से ज़्या करना चाहते हैं हो सकता हैं ?

परन्तु परमेश्वर हुगारा नहीं भरता।[27] मेरे सपने बिखरे थे; आपके भी बिखरे होंगे।

हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि जब परमेश्वर ''न'' कहता है, तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि उसने हमें छोड़ दिया है। हमारी बिनतियों को रद्द करने का अर्थ यह नहीं कि उसने हमें ठुकरा दिया है।[28] बाद में परमेश्वर ने दाऊद को बताया कि ''यह जो तेरी इच्छा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तुम ने *भला* तो किया'' (1 राजा 8:18)।

दूसरा शमूएल 7 भी सिखाता है कि जब परमेश्वर ''न'' कहता है, तो कभी-कभी इसका कारण यह होता है कि उसके मन में इससे भी कोई अच्छी बात होती है। दाऊद को यह बताने के बाद कि वह इस्राएल के लिए ज़्या करेगा, परमेश्वर ने कहा, ''यहोवा तुझे यह भी बताता है कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा'' (आयत 11)। यहां हमें शब्दों का खेल मिलता है: ''तू मेरे लिए घर (मंदिर) नहीं बनाएगा, परन्तु मैं तेरे लिए एक घर (राजघराना) बनाऊंगा।'' दूसरा शमूएल 7:11-16 को पुराने नियम की ''सैद्धांतिक वार्ता'' कहा जाता है। परमेश्वर ने दाऊद को उसका राजघराना स्थापित करने के लिए कहने के बाद, आगे बताया:

> जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा। मैं उसका पिता ठहरूंगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा। यदि वह अधर्म करे, तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से, और आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूंगा। परन्तु मेरी करुणा उस पर से ऐसे न हटेगी, जैसे मैं ने शाऊल पर से हटाकर उसको तेरे आगे से दूर किया। वरन तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे साज़्हने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बची रहेगी (2 शमूएल 7:12-16)।

दाऊद को दो प्रतिज्ञाएं दी गई थीं: (1) उसके पुत्र ने मंदिर को बनाना था और (2) उसका राजघराना सदा तक रहना था। दाऊद ने इन प्रतिज्ञाओं को पहले अपने पुत्र सुलैमान के लिए समझा।[29] दूसरी प्रतिज्ञा सुलैमान के बाद दाऊद के वंशजों द्वारा यहूदा की गद्दी पर राज करने की थी। इन राजाओं के राजा न होने पर भी, यहोवा ने ''दाऊद के कारण'' राजघराने को सदा तक रखना था (1 राजा 15:4)। परन्तु अंत में परमेश्वर का धीरज खत्म हो गया। यहूदा का दक्षिणी राज्य बाबुल का दास हो गया। अब दाऊद का कोई वंशज सिंहासन पर नहीं बैठता था। तब भी परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा नहीं भुलाई। उसने भविष्यवज़्ताओं को उस आने वाले, अर्थात दाऊद के वंश के बारे में बताने के लिए प्रेरित किया, जिसने दाऊद की गद्दी पर बैठना था:

> यहोवा की यह भी वाणी है
> देख ऐसे दिन आते हैं

जब मैं दाऊद के कुल में
एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा,
और वह राजा बनकर बुद्धि से राज करेगा,
और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। ...
और यहोवा उसका नाम ''हमारी धार्मिकता'' रखेगा
(यिर्मयाह 23:5, 6)।

''धर्मी यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1) उन भविष्यवाणियों का पूरा होना था। मज़ी रचित सुसमाचार का आरज़्भ इन शज़्दों से होता है, ''... *दाऊद की संतान,* यीशु मसीह की वंशावली'' (आयत 1; लूका 3:31 भी देखें)। राजा दाऊद की संतान के रूप में, यीशु एक अनंत राज्य अर्थात एक आत्मिक राज्य स्थापित करने आया, जो कभी नष्ट नहीं होना था (तुलना दानिय्येल 2:44; यशायाह 2:2-4; मरकुस 1:14, 15; मज़ी 16:18, 19; मरकुस 9:1; यूहन्ना 18:36; लूका 24:45-49; प्रेरितों 1:6-8; 2:1-4; इब्रानियों 12:28)। पुनरुत्थान के बाद यीशु स्वर्ग में वापस जाकर ''दाऊद के सिंहासन'' (प्रेरितों 2:29-36; प्रकाशितवाज़्य 3:7) दाऊद के सिंहासन पर बैठ गया। राजा यीशु वहां से अब अपने राज्य अर्थात अपनी कलीसिया पर आज भी राज्य कर रहा है (तु. 1 कुरिन्थियों 15:24-27; कुलुस्सियों 1:13)।

इस प्रकार इब्रानियों के लेखक ने संकेत दिया कि 2 शमूएल 7 की महान प्रतिज्ञाएं अन्ततः मसीह में पूरी हो गईं। लेखक ने पूछा, ''ज़्योंकि स्वर्गदूतों में से उस [परमेश्वर] ने कब किसी से कहा, ... 'मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा'?'' (इब्रानियों 1:5)। संदर्भ में इसका उज़र समझा जाता है, कि ''परमेश्वर ने अपने किसी स्वर्गदूत से नहीं कहा, परन्तु अपने पुत्र अर्थात् यीशु से अवश्य कहा।'' परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखक परोक्ष रूप से इस बात की पुष्टि कर रहा था कि सुलैमान यहूदा के अन्य राजा, 2 शमूएल 7 का अस्थाई और आंशिक पूरा होना, जबकि हमारा प्रभु यीशु अंतिम और पूर्णतया पूरा होना है!

एक क्षण के लिए रुक कर जो मैंने कहा है, उसकी गंध ले। दाऊद के दिमाग में लकड़ी और पत्थर की बनी नाशवान इमारत थी, जिससे यरूशलेम में आने वालों को आशीष मिलनी थी। परमेश्वर के दिमाग में एक अनन्त राज्य था, जिससे अगली सदियों में लाखों-करोड़ों लोगों को आशीष मिलनी थी! यह सत्य है कि जब परमेश्वर हमारे स्वप्नों को ''न'' कहता है, तो कई बार उसके मन में उससे जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, कहीं अधिक अच्छी और दीर्घकालीन बात होती है।

परन्तु आइए इस तथ्य को रेखांकित करने की दाऊद ने एक बार फिर परमेश्वर की सलाह लिए बगैर योजनाएं बना लीं।[30] उसके इरादे नेक थे, उसकी इच्छा प्रभु की महिमा करने की थी। तो भी उसने पहले प्रभु से नहीं पूछा, और परमेश्वर ने उसकी योजनाओं के लिए ''न'' कह दी। बाद में पौलुस ने उन लोगों के बारे में लिखा जिन्हें ''परमेश्वर के लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं'' (रोमियों 10:2)। हमारी साफ नीयत परमेश्वर के प्रकाशन से भी मेल खाती होनी चाहिए। आराधना हो या प्रभु के लिए कोई और सेवा की बात, साथ नीयत ही काफी नहीं है।

सच्ची अराधना जीवन को परमेश्वर के साथ मिला देती है (2 शमू. 7:18-29; 1 इति. 17:16-27; 22; 28)

दाऊद को ''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष'' इसीलिए कहा जाता है कि वह प्रभु की डांट का उज़र उसकी इच्छा के अनुसार देता था।

यदि मैं दाऊद होता, तो नातान द्वारा यह बतीने के बाद कि मुझे मंदिर बनाने की अनुमति नहीं होगी, मेरे लिए इस बात का कोई महत्व न होता कि परमेश्वर के मन में कोई अच्छा विचार ज़्या है। मैं दो काम करता। पहला, मैं सप्ताह भर या इससे अधिक समय तक नाराज परेशान रहता। परन्तु ध्यान दें कि नातान द्वारा परमेश्वर का संदेश देने के बाद दाऊद की प्रतिक्रिया ज़्या थी (2 शमूएल 7:17), ''तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सज़्मुख बैठा[31]'' (आयत 18क)। दाऊद उस तज़्बू में जिसे उसने संदूक के लिए तैयार किया था जाकर अपने प्रभु की उपस्थिति में एक सेवक की तरह बैठ गया।

उसके बाद की गई मन को छू लेने वाली प्रार्थना में, दाऊद भज़्तिपूर्ण, विनम्र तथा नि:स्वार्थ था। 10 बार दाऊद ने अपने आप को ''तेरा सेवक'' कहा। दाऊद ने प्रार्थना की कि जो कुछ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, वह पूरी हो जाए और परमेश्वर की महानता सब लोगों पर प्रकट हो। उसकी प्रार्थना की कुछ विशेष बातों पर ध्यान दें:

> और मेरा घराना [अर्थात, मेरे पिता का घराना] ज़्या है, कि तू ने मुझे यहां तक [सिंहासन पर] पहुंचा दिया है? ... दाऊद तुझ से और ज़्या कह सकता है? हे प्रभु यहोवा, तू तो अपने दास को जानता है! ... इस कारण हे यहोवा परमेश्वर, तू महान है; ज़्योंकि जो कुछ हमने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है। ... और अब हे प्रभु यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तेरे वचन सत्य [भरोसे योग्य; NIV] हैं, ... ज़्योंकि, हे प्रभु यहोवा, तू ने ऐसा ही कहा है, और तेरे दास का घराना तुझ से आशीष पाकर सदैव धन्य रहे (2 शमूएल 7:18, 20, 22, 28, 29)।

दूसरा, यदि मैंने दाऊद के जूते पहने होते, तो मैं यही कहता, ''यदि मुझे मंदिर बनाने की अनुमति नहीं दी जाती, तो मैं किसी काम को भी नहीं करता। अब यह सुलैमान की सिरदर्दी है!'' परन्तु दाऊद ने अपने बाकी जीवन का अधिकतर भाग मंदिर के निर्माण की तैयारी के लिए लगाया।

> तब दाऊद ने ... परमेश्वर का भवन बनाने को पत्थर गढ़ने के लिए राज ठहरा दिए। फिर दाऊद ने फाटकों के किवाड़ों की कीलों और जोड़ों के लिए बहुत सा लोहा, और तौल से बाहर बहुत पीतल, और गिनती से बाहर देवदार के पेड़ इकट्ठे किए; ज़्योंकि सीदोन और सोर के लोग दाऊद के पास बहुत से देवदार के पेड़ लाए थे। और दाऊद ने कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और लड़का है, और जो भवन यहोवा के लिए बनाना है, उसे अत्यन्त तेजोमय और सब देशों में प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिए; इसलिए मैं उसके लिए तैयारी करूंगा। ... (1 इतिहास 22:2-5)।

परमेश्वर ने दाऊद को आशीष दी और मंदिर के लिए ईश्वरीय खाका देने के लिए अपना पवित्र आत्मा भेजा।[32] अंततः, दाऊद ने सुलैमान को बुलाकर ''इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए भवन बनाने की आज्ञा दी'' (1 इतिहास 22:6)। उसने अपने पुत्र से कहा:

> सुन, मैंने अपने ज़्लेश के समय यहोवा के भवन के लिए एक लाख किज़्कार सोना, और दस लाख किज़्कार चांदी, और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया है, कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है; और लकड़ी और पत्थर मैं ने इकट्ठे किए हैं, और तू उनको बढ़ा सकेगा। सोना, चांदी पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है, ... (1 इतिहास 22:14, 16)।

मंदिर की कीमत करोड़ों डॉलर से भी अधिक आंकी जाती है!

> तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को ... जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे दिए। मैं ने यहोवा की शज़्ति से जो मुझ को मिली, यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है (1 इतिहास 28:11, 12, 19)।

दाऊद ने मंदिर के सामान और खाके की बात अपने मन से नहीं बताई। उसने सुलैमान को परमेश्वर की प्रेरणा से खाके दिया।

कृपया ध्यान दें कि प्रभु के संदेश के लिए दाऊद की प्रतिक्रिया में उसकी अपनी इच्छाओं का त्याग करके परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करना और यह सब साफ नीयत से करना था! दाऊद की इच्छा हमेंशा परमेश्वर के निकट आने की थी। यही तो आराधना का सार है। यदि हम सही मन से अराधना करते हैं, तो बाद में हमारे मन और हमारे जीवन परमेश्वर की इच्छा के सुर में सुर मिलाएंगे।

सारांश

जब यशायाह ने प्रभु को, ''विशाल और महिमा युज़्त'' देखा तो वह पुकार उठा:

> हाय! हाय! मैं नाश हुआ;
> ज़्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूं,
> और अशुद्ध होंठ वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूं;
> ज़्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को
> अपनी आंखों से देखा है (यशायाह 6:5)।

आज भी यदि हम यह अहसास कर पाएं कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में हैं अर्थात हम पवित्र भूमि पर खड़े हैं, तो हमारी अराधना में कितना अंतर आ सकता है!

मुझे उज़्मीद है कि निजी उपासना हो या परमेश्वर के लोगों की निजी अराधना हो या सार्वजनिक अराधना हो, हम आराधना के महत्व को समझ गए हैं। आराधना हमारे धर्म का

हृदय है; यह हमारे जीवनों का केन्द्र होनी चाहिए।

हमारी समस्या यह है कि हम आराधना को अपने जीवन ढाल लेते हैं अर्थात् एक घंटा यहां और कुछ मिनट वहां। दाऊद ने आराधना को अपने जीवन के अनुकूल नहीं बनाया था बल्कि परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए उसका जीवन ही आराधना के इर्द-गिर्द था। दूसरी ओर, जब हम एक घंटा यहां और एक वहां देते हैं, जब हम आराधना के लिए समय नहीं देते, इससे हमारी समय सारिणी में एक छोटा सा छिद्र रह जाता है, जो जल्द भर जाता है।

''हे परमेश्वर, हम तेरे सामने उन लोगों के रूप में आते हैं, जो बार-बार उस भक्ति और श्रद्धा को दिखाना चुक जाते हैं जिसके तू योग्य है। हमें नहीं मालूम कि आराधना में तू हमारी कमियों को ज़्यो सहता रहता है, अब, हमारी सहायता कर कि यह जानने के लिए कि तू निकट हैं, तेरी उपस्थिति को महसूस करने दाएं, ताकि हम विनम्र हो सकें और तेरे जैसे बन नाएं। हमारी सहायता कर कि इस आराधना से हम तेरे दिल के साथ दिल मिला कर बाहर जाएं। प्रभु शीशु के नाम में, आमीन।''

प्रवचन तथा विज़ुअल-एड नोट्स

प्रवचन नोट्स: दूसरा शमूएल 6; 7 दाऊद के जीवन का चरम बिन्दु है। इन अध्यायों पर कई जबर्दस्त पाठ तैयार किए जा सकते हैं।

2 शमूएल 6 और 1 इतिहास 13; 15 के आधार पर, ''नई गाड़ियां'' पर कई शानदार प्रवचन दिए गए हैं। पाठ में दो प्रकार की ''नई गाड़ियां'' का वर्णन है: शिक्षा सज़्बन्धी गलती की नई गाड़ियां और अश्रद्धा की नई गाड़ियां। एक तीसरी जोड़ी जा सकती है: सांसारिक तकनिकों की नई गाड़ियां। उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ के रूप में सुसमचार पर निर्भर होने के बजाय (रोमियों 1:16), हम मानवीय बुद्धि तथा विज्ञापन तकनीकों पर मोहित हो सकते हैं।

2 शमूएल 6 से आराधना पर एक व्यावहारिक सबक दिया जा सकता है। पाठ के दौरान, प्रभु भोज में भाग लेने की गंभीरता पर ज़ोर दें (''पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करें'' [लैव्यव्यवस्था 22:15])। संदेश के तुरन्त बाद, प्रभु भोज लें। निमन्त्रण संदेश से पहले या भोज के बाद दिया जा सकता है।

1 इतिहास 15:8-36 में लिखित भजन एक शानदार अतिरिज़्त अध्ययन भजन जाएगा। इसका अध्ययन भजन 105 और 106 के सज़्बन्ध में किया जा सकता है।

मीकल और दाऊद की कहानी ''खुशहाल परिवार को कैसे बर्बाद करें'' पर जबर्दस्त सबक दिया जा सकता है।

2 शमूएल 7 से ''जब परमेश्वर 'न' कहता है'' पर पाठ के लिए उछाल तखता मिल सकता है।

भजन 132, 2 शमूएल 7 का सार है। भजन 89 भी 2 शमूएल 7 में दाऊद के साथ की गई वाचा पर है।

2 शमूएल 7 में दाऊद के साथ की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के आस पास विश्वास को मजबूत करने वाला सबक तैयार किया जा सकता है। ध्यान दें कि पुराने नियम की इन आयतों का हमारे जीवन में तथा हमारे अनन्तकाल में सीधा प्रभाव कैसे होता है। 2 शमूएल 7 पर हैनरी एच. हेली के नोट्स काम आ सकते हैं। (*बाइबल हैंडबुक* [शिकागो, इलिनोयस: हैनरी एच. हेली, 1955], 174।)

विज़ुअल-एड नोट्स: वाचा के संदूक का पूरे आकार का मॉडल अच्छा विज़ुअल एड हो सकता है। सम्भव है कि बाइबल स्कूल के किसी शिक्षक के पास यह मॉडल हो या वह बाद में अपनी बाइबल कलास में इस्तेमाल करने के लिए इसे बनाने को तैयार हो। यदि आपको मॉडल नहीं मिलता, तो लोगों को अहसास कराने के लिए कि उस संदूक में ज़्या ज़्या था, संदूक के आकार के लगभग गज़े का एक डिज़्बा बनाया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]''करूब'' के लिए अंग्रेज़ी का बहुवचन शब्द ''Cherubim'' है। ये सम्भवतया स्वर्गदूतों का प्रतीक थे। [2]महायाजक अपने और लोगों के पाप के लिए प्रायश्चित के ढकने पर छिड़कता था। [3]NASB के प्रथम संस्करण में बवासीर था, परन्तु अति आधुनिक अनुवादों में ''गिल्टियां'' ही है (1 शमूएल 5:6; आदि)। [4]KJV तथा NASB में मरने वालों की संज़्या 50,070 है। NIV, NEB तथा अन्य अनुवादों में 70 है। [5]1 शमूएल 7:2 के बीस वर्ष सम्भवतया सन्दूक के किर्यात्यारीम में रखने और आयत 3 में शमूएल द्वारा बुलाई गई सभा के बीच का समय है। दाऊद के शासन में शमूएल की सेवकाई के कम से कम बीस वर्ष और शाऊल के शासन के दस या अधिक वर्ष जोड़ने पर उसके शासन का समय सज़र से अधिक वर्ष बनता है। [6]ध्यान दें कि उन्होंने इसे उस अवसर के लिए विशेष तौर पर बनाई गई ''एक *नई* गाड़ी पर'' रखा होगा। मैं कल्पना करता हूं कि इसके लिए गााड़ी को बहुत अच्छी तरह से सजाया गया होगा! परन्तु, परमेश्वर ने इसका निर्देश नहीं दिया था। [7]किसी ने अस्पष्ट स्मरण रखा होगा कि निवास के दूसरे भागों को ले जाने के लिए गाड़ियों का इस्तेमाल किया जाता है (गिनती 7:3-8)। [8]1 इतिहास 13:7 कहता है कि वे गाड़ी को ''हांकने'' लगे। वे गाड़ी के साथ-साथ चलते हुए गाड़ी को खीचने वाले बैलों को हांकते होंगे। [9]प्राचीन रेखा चित्रों के अनुसार, गाड़ी साधारणतया दो बैलों द्वारा खींची जाने वाली दो पहिया होती थी। [10]1 इतिहास 13:9. 2 शमूएल 6:6 में ''नाकोन के खलिहान'' हैं। ज़्योंकि बाइबल में और कहीं ''नाकोन'' शब्द नहीं मिलता, इसलिए हम पक्का नहीं कह सकते कि इसका अर्थ ज़्या है। NEB में ''एक *निश्चित* खलिहान'' है। कुछ लोगों का मानना है कि ''नाकोन'' किदोन का दूसरा नाम है।

[11]इसे एक उदाहरण से जहां किसी को किसी मूल्यवान वस्तु को हानि पहुंचाने से रोका गया हो, और दण्ड देने के बजाय उसे पुरस्कार दिया गया हो, इस्तेमाल किया जा सकता है। याद रखें कि यदि वे सन्दूक को ध्यान से ले जा रहे होते, तो उसे कभी खतरा न होता। [12]जगह का नाम ''पेरेस-उज्जा'' रखा गया था, जो ''उज्जा के विरुद्ध [परमेश्वर के] क्रोध'' को दिखाने के लिए था (2 शमूएल 6:8)। यह देर तक याद रखने वाली ईश्वरीय चेतावनी थी। [13]''गती'' का अर्थ ''गत का वासी'' है (नोट 2 शमूएल 15:18), परन्तु यहां संभवतया यह पलिश्तीनी का नाम नहीं है। कई इस्राएली नगरों के नाम ''गत'' थे (यहूसू 21:20-25); वह संभवतया उनमें से एक का रहने वाला था। वह संभवतया ''ओबेद-एदोम'' था जिसका उल्लेख बाद में लेवियों में किया गया (1 इतिहास 15:18; आदि)। [14]जिस कहानी का हम अध्ययन कर रहे है, उसमें दाऊद ने वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल किया, परन्तु यह तो पुराने नियम की आराधना थी। ऐसा संगीत धूप जलाने और

पशुओं के बलिदान की श्रेणी में आता है, जो कलीसिया की स्थापना से समाप्त हो गए। [15]मत्ती 15:9 में यीशु के कथन पर ध्यान दें। [16]ये सबक व्यक्तिगत, व्यावहारिक तथा कष्टदायक हो सकते हैं! [17]1 इतिहास 15:1, 3, 12; 2 शमूएल 6:17 भी देखें। दाऊद ने संदूक को मंदिर के परम पवित्र स्थान के बजाय कहीं और क्यों रखा, या परमेश्वर ने उसे ऐसा करने की अनुमति क्यों दी? इसमें दो विचार पाए जाते हैं: (1) यह तथ्य कि सन्दूक कई और जगहों पर रहा था और उससे उन जगहों को आशीष मिली थी इस बात का संकेत था कि स्थान का महत्व नहीं है। (2) मंदिर की अलग-अलग वस्तुएं बिखरी हुईं थीं, और उन भागों को वापस इकट्ठा करने का यह पहला कदम था। (3) दाऊद को परमेश्वर की ओर से प्रकाशन मिला हो सकता है, जिसके बारे में हमें नहीं बताया गया होगा। [18]केवल यही पद है, जिसमें इब्रानी शब्द का अनुवाद ''नाचता'' मिलता है। (2 शमूएल 6:14, 16)। इसका मूल अर्थ ''तेजी से घूमना'' है। [19]1इतिहास 15:27; 2 शमूएल 6:14 भी देखें। एपोद तंग, बाजू-रहित स्वेटर होता था। इसे याजकों द्वारा बुना जाता था (1 इतिहास 15:27); इसे सेवकों द्वारा भी बुना जाता था। यह राजा द्वारा पहना जाने वाला सामान्य वस्त्र *नहीं* था। [20]उन्हें रखने के लिए स्थाई ढांचा बनने तक होमबलि के लिए निवास तथा वेदी अस्थाई तौर पर गिबोन में रहने दी गई थी। वहां की सेवाओं को पूरा करने के लिए दाऊद ने अन्य लोगों को नियुक्त किया था (1 इतिहास 16:3से)। जब मंदिर का निर्माण पूरा हो गया, तो सन्दूक और निवास को वहां रख दिया गया था (तुलना करें 1 राजा 8:4; 2 इतिहास 5:5)।

[21]टीकाकार इस पर सहमत नहीं हैं कि दाऊद ने अपना नंगेज दिखाया था या नहीं; मेरा विचार है कि उसने नहीं दिखाया था। [22]इसका अर्थ यह हो सकता है कि उसकी ''कोई संतान न *हुई,*'' परन्तु इसका अर्थ संभवतया यह है कि उसकी कोई संतान नहीं थी। 2 शमूएल 21:8 में KJV, NKJV तथा अन्य अनुवादों में कहा गया है कि मीकल की कई संतानें थीं। परन्तु सप्तति अनुवाद तथा कई इब्रानी हस्तलेखों में ''मीकल'' की जगह ''मेरब'' है, और अधिकतर आधुनिक अनुवादों में यही संकेत मिलता है। [23]पुराने नियम के समय में, संतानहीन होना बहुत बड़ा श्राप माना जाता था (नोट 1 शमूएल 1:5, 6)। [24]दूसरा शमूएल 7:1 कहता है, ''जब राजा अपने भवन में रहता था, और यहोवा ने उसके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया था।'' संभवतया अध्याय 8 में संक्षेप में बताए गए युद्धों में से कम से कम एक युद्ध अध्याय 6 और 7 के काल के दौरान हुआ था। [25]यहां हम नातान के बारे में पहली बार पढ़ते हैं, जिसने दाऊद के बाद के जीवन में प्रमुख भूमिका निभाई (2 शमूएल 12:1-14; 1 राजा 1)। दाऊद ने अपने एक पुत्र का नाम ''नातान'' रखा था (2 शमूएल 5:14)। [26]अपने संदेश में परमेश्वर ने दाऊद को याद दिलाया कि वह सामान्य तौर पर इस्राएल के लिए और विशेष तौर पर दाऊद के लिए क्या कर सकता है, और बताया कि वह भविष्य में क्या करेगा। [27]''हुंगारा भरना'' कहने का अर्थ '' 'हां' कहना'' है। [28]''रद्द करना'' अलंकार की भाषा है, जिसका अर्थ ''उपेक्षा करना'' या ''समाप्त करना'' है। इस वाक्य के पहले भाग में, इसका इस्तेमाल पहले अर्थ में हुआ है; अंतिम भाग में इसका इस्तेमाल दूसरे अर्थ में हुआ है। [29]1 इतिहास 22:6-10 और 28:6-10 में दाऊद ने 2 शमूएल 7 से उद्धृत किया और इसे सुलैमान पर लागू किया। मेरा मानना है कि दाऊद इन शब्दों को सुलैमान पर लागू करके सही कर रहा था। (उदाहरणत:, आयत 14 पर ध्यान दें)। [30]प्रश्न उठता है, कि क्या दाऊद ने नातान से एक मित्र के तौर पर बात की या नबी के रूप में? यदि उसने उससे नबी के रूप में बात की, तो हो सकता है कि उसने इस मामले में परमेश्वर की इच्छा जानने का प्रयास किया हो। मेरा अनुमान है कि उसने एक मित्र के रूप में बात की। जो भी हो, गलती दाऊद की थी या नातान की या दोनों की, परमेश्वर से नहीं पूछा गया था।

[31]प्रार्थना के लिए बैठने के ढंग के लिए बाइबल में यह (1 इतिहास 17:16 के क्रास रैफरैंस के साथ) एक मात्र हवाला है। यह झुकने की अवस्था का अलग रूप हो सकता है जैसे सिर उठाकर घुटनों पर बैठना। [32]तुलना 1 इतिहास 28:19. एक लेखक इस प्रमाण के लिए कि परमेश्वर के प्रकाशन को ''समय के अनुसार बनाने के लिए'' बदला जा सकता है, ''जैसे दाऊद ने निवास को बदला था।'' यह ध्यान देने वाली बात है कि यह ''बदलाव'' *परमेश्वर* द्वारा किया गया था।